

enquiry can be conducted and completed, it cannot be said as to what is the correct position.

(ii) Shelving of certain proposed Steel Plants in South India

SHRI R KOLANTHAIVELU (Tiruchengode): Sir, the Salem Steel Plant's detailed project Report was prepared twice. The second DPR was accepted by the Government and the initial work was started. But now this DPR has been brushed aside. The Salem Steel Plant has just become a fabrication plant, getting plates from Rourkela Steel Plant and then processing it. While this is the fate of Salem Steel Plant along with this Vizianagaram Steel Plant was announced. During last year's Chikmagalur election, Mangalore Steel Plant was announced. After the crushing defeat of the ruling party, Mangalore Steel Plant has been put in cold storage. Vizianagaram Plant has been shelved. If the industrial climate is not good for the completion of these projects one can appreciate the Government's lukewarm attitude. After the advent of the Janata Party at the Centre in 1977, Paradip Steel Plant idea was mooted. Within two years this project is already half-completed. When the Government of India imports steel, naturally one gets incensed. Now, steel is being imported. But Salem Steel Plant has been sliced. Vizianagaram Steel Plant and Mangalore Steel Plant has been shelved. I would like to know the reasons for this. I request that the Minister of Steel should make a detailed statement. He should clarify whether South India is not being neglected in this matter.

(iii) Loss of foodgrains for want of proper storage arrangements by the Food Corporation of India.

डा० जसवी नारायण पांडेय (बंबलूर): उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपकी आज्ञा से नियम 377 के अन्तर्गत एक महत्वपूर्ण विषय की ओर इस सदन तथा सरकार का ध्यान आकषिप्त करना चाहता हूँ।

भारतीय खाद्य निगम के कुप्रबंध के फलस्वरूप जहाँ आज हजारों कुचकों को अपना गेहूँ समर्पण मूल्य से भी कम दामों पर बेचना पड़ रहा है वहाँ भण्डारण की दोषपूर्ण व्यवस्था से करोड़ों रुपये का अनाज नष्ट होता जा रहा है। विगत दिनों विभिन्न समाचार-पत्रों में अनाज की बर्बादी के जो आंकड़े आये हैं, वे वास्तव में चौंका देने वाले हैं। एक ही वर्ष में करोड़ों की हानि वास्तव में विचारणीय है। हम अपने उत्पादन का एक बड़ा भाग अन्धव्यवस्था के फलस्वरूप नष्ट कर देते हैं। भारतीय खाद्य निगम की खरीदी, भण्डारण, रख-रखाव आदि के बारे में यद्यपि कई बार चर्चों की जाती रही है किन्तु परिणाम शून्य है और आज स्थिति सुधार के बजाय खराबी की ओर है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि हमारी इसी दोषपूर्ण नीति का ही परिणाम है कि हम रूब रूब को निश्चित मात्रा में समय पर गेहूँ नहीं दे सके हैं और न वितरण नाम को दिए गए प्रास्तासन की ही पूर्ति कर सके हैं। आज यद्यपि खरीदी कहीं कहीं बढ़ रही है किन्तु उसकी स्थिति भी संतोषजनक नहीं है। खरीद गया गेहूँ बाहर खुले मैदानों में पड़ा है। उसे भरने के लिए गनीबेज भी उपलब्ध नहीं है। यद्यपि नियम का इस बात का ज्ञान था कि उम खरीदी करनी है और उम दृष्टि से कहां न्य केंद्र होंगे, कितनी खरीदी प्रत्येक केंद्र पर सम्भावित है, भण्डारण की क्या व्यवस्था होगी तथा यातायात का क्या प्रबंध है आदि, किन्तु ऐसा लगता है इन सभी बातों की ओर दुर्लक्ष किया गया है जिससे किसान भी परेशान हैं और गेहूँ बर्बाद होने की पूरी पूरी सम्भावनाएँ हैं। अतः यह आवश्यक है कि इस ओर तुरन्त ध्यान दिया जाए और उचित व्यवस्था की जाए जिससे कि किसान परेशान न हों, अनाज बर्बाद होने से बचे व करोड़ों की आर्थिक हानि को रोका जा सके। इसी प्रकार वर्तमान में भण्डारों में रखे गए गेहूँ व चावल की पूरी हिफाजत की जाए, अन्धव्यवस्था अनाज खराब होकर अनुपयोगी होने की सम्भावना है जिससे कि आज हो रही करोड़ों की हानि और बढ़ सकती है। खाद्य निगम की कई दुर्लक्ष्यताओं की ओर ध्यान आकषिप्त करने के लिए, सासदों को घरना भी देना पड़ता है। मैं माननीय कृषि मंत्री जी का ध्यान इस ओर आकषिप्त करते हुए निवेदन करूँगा कि सम्पूर्ण स्थिति को गम्भीरता से लें व तुरन्त प्रभावी कार्यवाही करें जिससे किसानों को समर्पण मूल्य मिले, अनाज बर्बादी से बचे व करोड़ों की आर्थिक हानि रोकी जा सके।

(iv) Demonstration by Nepalese in front of their Embassy in New Delhi

श्री जसवी राम बासुकी (मधुरा): उपाध्यक्ष महोदय, नेपाल के बारे में आप ने नियम 377 के अन्तर्गत मुझे अनुमति दी है, मैं सब से पहले महाशयन डा० मोहिया को सलाम करूँगा जिन्होंने नेपाल विधेय बना कर के

उपाध्यक्ष महोदय : आप ने जो स्टेटमेंट दिया है, उस को पढ़िये ।

श्री मनीराम बागड़ी : उस के बाद श्री बी० पी० कोयराला, बूहा घोर जो जेल काटते-काटते थक गया है, आज भी जेल काट रहा है...

उपाध्यक्ष महोदय : आप ने जो स्टेटमेंट दिया है, उसी को पढ़ें ।

श्री मनीराम बागड़ी : मैं उसी को पढ़ रहा हूँ ।

नैपाल की जनता ने हमेशा ही जयप्रकाश नारायण डा० राम मनोहर लोहिया की रज्जुमार्ई में अग्रणी राजशाही के खिलाफ भारतीय जनता की मदद की थी । जब हम लोग जेप्रा में थे तो आशा करने थे कि दुनिया भर के देश जनतंत्र के वास्ते हमारे देश में हमारी मदद करें । यदि हम इस मामले में दिलचस्पी नहीं लेते तो इस का मतलब होगा कि भारत नैपाल की किसी और मुल्क की गंद में डाल रहा है । आज नैपाली भाग कर भारत में आ रहे । और शरण न रहा है । बड़े दुख की बात है कि नैपाल की जनता जब रोष प्रकट करने को दिल्ली स्थित नैपाली दूतावास में जा रही थी तो उन पर लाठी और प्रभु गैस छाड़ी गई ।

मे आशा करता हूँ कि भारत सरकार इस सम्बन्ध में कुछ कदम उठायेगी । श्री जय प्रकाश नारायण खुद काम नहीं कर सकते हैं, परन्तु उन के सचिव के नेतृत्व में एक कमेटी बनी है । आप देश की जनता की भावनाओं का समर्थन और यह सदन नैपाल की जनता के साथ सहानुभूति दिखाये ।

एक शब्द में और कहना चाहता हूँ—आप भी डा० लोहिया के साथ रहे हैं ।

उपाध्यक्ष महोदय : जो स्टेटमेंट आप ने दिया है, वही पढ़ सकते हैं ।

श्री मनीराम बागड़ी : मैं उन को मलाम जरूर देता हूँ—जो गरीब हुए हैं और मैं इस सदन से चाहूँगा कि आप लोग उन्हें हो कर उन के लिए जरूर श्रद्धांजलि अर्पित कीजिए, एक मिनट के लिए भी धारण कीजिए (स्वबध्ना) . .

(v) Report on the treatment of Dr. Ram Manohar Lohia in Willingdon Hospital.

श्री राजनारायण (रायबरेली) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आप की अनुकम्पा से एक प्रस्ताव ही आचम्यक विषय सदन के सम्मुख रख कर रहा हूँ और सदन के सम्मानित सदस्यों से निवेदन करता हूँ कि आज जरा इस को ध्यान

से सुनें । यह सदन एक प्रतिबिम्ब है, जो बाहर की घटनाओं की प्रतिबिम्बित करता है...

उपाध्यक्ष महोदय : आप का जो स्टेटमेंट है—उस को पढ़िये ।

श्री राज नारायण श्री स्वाम्य मंत्री ने डा० राम मनोहर लोहिया से सम्बन्धित रपट मदन में रखी । यह रपट प्रचुरी है और मन्त्र पर पर्दा डालती है । मदन में रपट रखते समय ही मैंने अपने भाषों को व्यक्त कर दिया था और आप को निवेदन किया था कि इन पर एक दिन वहम के लिए रखा जाये । वहम के लिए कुछ खाम खाम मुद्दा को आप की सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

। यह विचित्र बात है कि ब्रेडियर लाल, सीनियर पिजींगयन ने डा० लोहिया के यूरीनरी मिस्टम की जांच के कार्य को किंग खास मर्जिन के जिम्मे नहीं किया । उस वकन डा० पाठक सीनियर मर्जिन थे और डा० दन्वारी उन में वा स्तर नीचे थे ।

यह पहला सवाल है—आप से मेरा निवेदन है कि इन परने सवाल का जवाब आप स्वाम्य मंत्री ने हम मदन का दिलाया ।

2. डा० फकीर चन्द ने डा० लोहिया के हाईपरटेंशन की बावत डा० करौली से विचार-विमर्श किया और कहा कि इस समय हाईपर-टेंशन का अपरेशन करना ठीक नहीं । लेकिन डा० करौली ने डा० फकीरचन्द से कहा कि अब वह यानी डा० लोहिया अपनी सब से अच्छी हालत में हैं और अमर्फीमिया दिया जा सकता है और उस के बाद की हालत की जिम्मेदारी हमारी होगी ।

मेरा आपसे मे विनम्र निवेदन है कि डा० करौली से पूछा जाये कि उन्होंने क्या जिम्मेदारी निवाही ?

उसके लिए आप को चिन्ता करने की जरूरत नहीं । मेरे विचार में यही बात डा० लोहिया को हम से जुदा करन का कारण बनी ।

यहां पर हम बात को साफ-साफ कहता हूँ—आगर उस समय अपरेशन न हुआ होता तो डा० लोहिया हम में प्रलय न होते ।

3. अपरेशन की तारीख की एडवांस करने के कारणों के बारे में कमेटी चुप है, क्योंकि रिकार्ड से इस सम्बन्ध में कोई मदद नहीं मिली । असल में दो रिकार्ड का न मिलना भी इस बात को स्पष्ट कर देता है कि लोहिया को जानबूझ कर छिपाया जा रहा है ।